

DR.MALA KUMARI

**ASSISTANT PROFESSOR (GUEST
TEACHER)**

DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY

A.N.D COLLEGE SHAHPUR

PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)

PAPER-2 ,UNIT-9,

**ENVIRONMENTAL ISSUES:EFFECT OF NOISE UPON
BEHAVIOUR**

LECTURE-93

व्यवहार पर आवाज का प्रभाव

EFFECT OF NOISE UPON BEHAVIOUR

कई मनोवैज्ञानिकों द्वारा किये गए अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ की आवाज का प्रभाव तनावपूर्ण होता है | जब व्यक्ति को उच्च-तीव्रता की आवाज को सुनना पड़ता है तो वे दैहिक रूप से अधिक उत्तेजित हो जाते है और उनके व्यवहार में चिड़चिड़ापन एवं आक्रमकता में वृद्धि हो जाती है | यह भी देखा गया है की इस तरह के आवाज से सतत घिरे रहने पर व्यक्ति उसके साथ धीरे-धीरे अपने आप को अनुकूलित कर लेता है |अनुकूलन के इस प्रक्रिया को हैरिस ने अभ्यास कहा है |

यद्यपि यह सही है की आवाज के साथ अभ्यास की प्रक्रिया में व्यक्ति समंजन या अनुकूलन स्थापित कर लेता है , फिर भी यह मानव व्यवहार

के कई पहलुओं पर दीर्घकालीन प्रभाव डालने में सक्षम होता है | इस सिलसिले में ग्लास तथा सिंगर (1972) तथा ग्लास , सिंगर एवं पेनिवेकर (1977) द्वारा कई महत्वपूर्ण अध्ययन किये गए हैं | इन अध्ययनों में इन लोगों ने प्रयोज्यों को विभिन्न तरह की आवाज उत्पन्न होते रहने की अवस्था में कुछ कार्य करने के लिए कहा |कुछ अवस्था में उच्च तीव्रता की आवाज तथा कुछ अवस्था में निम्न –तीव्रता की आवाज उत्पन्न की जाती थी तथा कुछ अवस्था में किसी भी तरह की आवाज उत्पन्न नहीं की जाती थी अर्थात वह शांत अवस्था होती थी |कुछ अवस्थाओं में आवाज पूर्वकथनीय (PREDICTABLE) होता था |कुछ अवस्था में आवाज पूर्वकथनीय नहीं था | इन सभी अवस्थाओं में प्रयोज्यों के दैहिक प्रतिक्रियाओं तथा उनके निष्पादन का मापन किया गया |परन्तु तीव्र आवाज से कार्य निष्पादन खासकर जटिल कार्य निष्पादन बुरी तरह प्रभावित होता पाया गया |दैहिक मापों के आधार पर यह देखा गया है की आवाज के पूर्वकथनीय नहीं होने पर भी प्रयोज्यों अपने आपको उसके प्रति अनुकूलित कर लिए |

यद्यपि यह सही है की दैहिक माप यह बतलाते हैं की आवाज के प्रति व्यक्ति अनुकूलन स्थापित कर लेता है ,परन्तु फिर भी उसे इसकी कीमत चुकानी पड़ती है |ग्लास का मत है की इस अनुकूलन की प्रक्रिया में व्यक्ति को अपनी “मनोवैज्ञानिकों उर्जा” का खर्च करना पड़ता है |इसका परिणाम यह होता है की उसे बाद के पर्यावरणी तनावों तथा कुंठाओं के साथ निबटने की शक्ति कम हो जाती है |इसका परिणाम यह होता है की उसका सामान्य व्यवहार तथा स्वास्थ्य दोनों ही खराब हो जाता है |आवाज के और भी कई तरह के प्रभाव देखने को मिले हैं |आवाज की अवस्था में व्यक्ति पर्यावरण के प्रति कम अनुक्रिया शील होता है |कोहेन तथा उनके सहयोगियों (1981) पेटरसन ने अपने अध्ययन में पाया की लगातार उच्च आवाज के स्तर में कार्य करने से व्यक्ति में सामान्य स्वास्थ्य समस्याएँ तथा

उच्च रक्त चाप की शिकायत हो जाती है। मीकम एवं स्मिथ (1977) ने तो अपने अध्ययन में यह भी पाया की उच्च तीव्रता की आवाज में लगातार कार्य करने से उनमें मानसिक अस्पताल में प्रवेश होने की प्रबलता अधिक बढ़ जाती है कुछ सामाजिक व्यवहारों पर भी आवाज का कुप्रभाव पड़ता है। जैसे ,मैथ्यूज एवं केनन (1975) ने अपने अध्ययन में पाया की कोलाहल की पूर्ण अवस्था में होने पर व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की मदद कम करता है।

एपलयार्ड तथा लिनटेल (1972) ने अपने अध्ययन में पाया की कोलाहल पूर्ण पास-पड़ोस होने पर अगल-बगल के व्यक्तियों के साथ सामाजिक अन्तःक्रिया में कमी हो जाती है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है की आवाज व्यक्ति को पर्यावरण की वस्तुओं की ओर ध्यान केन्द्रित करने में बाधक होता है परन्तु इसका उत्तर प्रभाव काफी खतरनाक होता है।